International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(4): 139-141

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(4): 139-141
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-05-2019
Accepted: 18-06-2019

डॉ. कृष्णा शर्मा
सहायक आचार्य, धर्मशास्त्र विभाग, राष्ट्रिय-संस्कृत संस्थान, जयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. कृष्णा शर्मा
सहायक आचार्य, धर्मशास्त्र विभाग, राष्ट्रिय-संस्कृत संस्थान, जयपुर, राजस्थान, भारत

शक्ति का स्वरूप - सनातन परम्परा के संदर्भ में

डॉ. कृष्णा शर्मा

शोध सारांश
सनातन धर्म और भारतीय दर्शन में शक्ति का महत्त्वपुर्ण स्थान है ।इस चराचर जगत को स्थिरता प्रदान करने में माया (शक्ति) और ब्रह्म का ही योगदान है । शक्ति को अनेक नामो से जाना जाता है कभी कृष्णप्रिया राधा, कभी विष्णुप्रिया लक्ष्मी, कभी रामसंगिनी सीता तो कभी शिवशक्ति पार्वती। चाहे जिस भी रूप में रूप में इन्हें जाना जाता रहे किन्तु हर युग में शक्तिकेंद्र शक्ति में ही समाहित रहा है ।इस शोध लेख में शक्ति के प्रमुख रूपों का वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

कुटशब्द: सनातन धर्म, शक्ति, माया, ईश्वर, राधा, दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती उषा, शिव, ब्रह्मा, विष्णु

प्रस्तावना
सनातन धर्म का वर्ण्य विषय मुख्यरूप से ब्रह्म व शक्ति पर ही दृष्टिगोचर होता है,जो कि हमारी आस्था के मुख्य स्तंभ भी माने जाते है । शक्ति माया का ही स्वरूप है ब्रह्म व माया एक दूसरे के अपर रूप है तथा पूरक है ।अतः एक के बिना दूसरा अधूरा है ।शक्ति ईश्वर की वह कल्पित माया है जो उसकी आज्ञा से सब काम करने वाली और सृष्टिरचना करने वाली अनन्तस्वरूपा अनन्तशक्तिसंपन्ना मानी जाती है ।यही शक्ति जगत के स्वरूप में प्रकट रहती है और प्रलयकाल में संपूर्ण जगत को स्वयं में विलीन कर अव्यक्तरूप से स्थित भी रहती है । यह संपूर्ण जगत की उत्पत्ति विकास व विनाश सभी रूपों में स्थित रहती है ।
भारतीय दर्शन में किसी न किसी नाम रूप से इसकी चर्चा की जाती रही है ।पुराणों में विभिन्न देवताओं का वर्णन प्राप्त होता है, जिनमें विभिन्न शक्तियों का उल्लेख मिलता है । इन शक्तियों को विविध देवियों के रूप में व मूर्तियों के रूप में जाना जाता है ।गीता में वर्णित योगमाया भी यही शक्ति है, जो व्यक्त और अव्यक्त रूप में विद्यमान है ।कृष्ण योगमाया के आश्रित होकर ही अपनी लीला करते है। राधा उनकी आह्लादिनी शक्ति है, जिनको विभिन्न स्वरूपों मे जाना जाता है । ब्रह्मवैवर्तपुराण में कहा भी है -

यथा त्वं राधिका देवी गोलोके गोकुले तथा ।
वैकुण्ठे च महालक्ष्मीर्भवती च सरस्वती ।।
भवती मर्त्यलक्ष्मीश्च क्षीरोदशायिनहः प्रियाः ।
धर्मपुत्रवधूस्त्वं च शान्तिर्ललक्ष्मीस्वरूपिणी।।
कपिलस्य प्रिया कान्ता भरते भारती सती ।

द्वारवत्यां महालक्ष्मीर्भवती रुक्मिणी सती ।।
त्वं सीता मिथिलायां च त्वच्छाया द्रोपदी सती ।
रावणेन हता त्वं च त्वं च रामस्य कामिनी ।।[1]

अर्थात् हे राधे! जिस प्रकार तुम गोलोक और गोकुल में श्रीराधिकारूप से रहती हो,उसी प्रकार वैकुण्ठ में महालक्ष्मी और सरस्वती के रूप में विराजमान हो ।तुम ही क्षीरसागरशायी भगवान विष्णु की प्रिया मर्त्यलक्ष्मी हो। तुम धर्मपुत्र की कान्ता लक्ष्मी-स्वरूपिणी शान्ति हो ।तुम ही भारत में कपिल की प्रिय कान्ता सती भारती हो ।तुम ही द्वारिका में महालक्ष्मी रुक्मिणी हो । तुम्हारी ही छाया सती द्रोपदी है । तुम ही मिथिला में सीता हो,तुम्हींको राम की प्रिया सीता के रूप में रावण ने हरण किया था । तुम्ही संपूर्ण शक्तिस्वरूपिणी हो ।नारदपञ्चरात्र में कहा कि –

यथा ब्रह्मस्वरूपश्च श्रीकृष्णः प्रकृते परः ।
तथा ब्रह्मस्वरूपा च निर्लिप्ता प्रकृते परा ।।
प्राणाधिष्ठातृदेवी या राधारूपा च सा मुने । [2]

जैसे श्रीकृष्ण ब्रह्मस्वरूप हैं तथा प्रकृति से सर्वथा परे है, वैसे ही श्रीराधा भी ब्रह्मस्वरूपा, माया के लेपसे रहित तथा प्रकृति से परे हैं । श्रीकृष्ण के प्राणों की जो अधिष्ठातृदेवी हैं वे ही श्रीराधा जी हैं जो सर्वशक्तिस्वरूपा हैं ।
उसी प्रकार शिव भी शक्तियुक्त होने पर सब कुछ करने में या न करने या अन्यथा करने में समर्थ हैं । शिव शब्द में इ की मात्रा शक्ति स्वरूपा ही है नहीं तो इ के बिना शिव शव के समान है । शक्तिसंपन्न शिव ही सब कर्मों को करने में समर्थ होते हैं और नन्दिकेश्वरकाशिका में कहा भी है –

इकारः सर्ववर्णानां शक्तितत्वातकारणं मतम्।।[3]

शक्ति द्वारा ही विष्णु की कीर्ति, कान्ति, तुष्टि, पुष्टि व रुद्र की गुणोदरी, गोमुखी, दीर्घजिव्हा, ज्वालामुखी आदि हैं। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार समस्त देवगणों की तेजोराशि देवीशक्ति के रूप में कही गयी है जिसकी शक्ति वैष्णवी, माहेश्वरी, ब्रह्माणी, कौमारि, नारसिंहि, इन्द्राणी, वाराही आदि हैं ।लिङ्गार्चनतंत्र मे कहा भी गया है -

प्रेते पूजा महेशानि कदाचिन्नास्ति पार्वती ।
रुद्रस्य परमेशानि रौद्रीशक्तिरितीरिता ।।
रौद्री तु परमेशानि आधा कुण्डलिनी भवेत् ।
वर्तते परमेशानि ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका।।
सार्द्धत्रिवलयाकारैः शिवं वेष्ट्य सदास्थिता ।
शक्ति विना महेशानि प्रेतत्वं तस्य निश्चितम्।।
शक्तिसंयोगमात्रेण कर्मकर्ता सदाशिवः।
अतएव महेशानि पूजयेच्छिवलिंगकम्।।[4]

अतः इन शक्तियों का देवों के स्वरूप व गुणारूप वर्णन प्राप्त होता है । शक्ति के अनन्त स्वरूप है तन्त्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठातृ देवी शक्ति के रूप में कही गयी है, जिसकी उपासना की जाती है और इसके उपासक शाक्त कहलाते हैं । यह शक्ति सृष्टि की रचना करने वाली और पूर्ण सामर्थ्यसंपन्न कही गयी है । बौद्ध जैन आदि संप्रदायों के तन्त्रशस्त्रों में भी शक्ति की कल्पना की गयी है ।तन्त्रिकों की परिभाषा में शक्ति को युवति, रूपवती, सौभाग्यवती विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है ।
वैदिक सूक्तों में भी अनेक स्थानों पर शक्ति का वर्णन प्राप्त होता है। मानवाकृति के रूप में 'उषा' का वर्णन एक सुन्दरी नवयुवती के रूप में किया गया है; जो एक नर्तकी के समान प्रकाशमय वस्त्रों से सुसज्जित है । ऋग्वेद के प्रथम मण्डल क ४८ वा सूक्त उषा सूक्त के नाम से है, जिसमें कहा गया है –

वि या सृजति समनं व्यर्थिनःपदं न वेत्योदती।
वयो नकिष्टे पप्तिवान्स आसते व्युष्टौ वाजिनीवति।।[5]

अर्थात् अपने आगमन के द्वारा वह संपूर्ण प्राणियों में जीवन का संचार करती है । मनुष्य, पशु, पक्षी सभी को अपने – अपने कार्यों में लगाती है तथा सबके मार्ग को प्रकाशित करती हुयी अन्धकार को दूर भगाती है ।उषा सूक्त मे आजे भी कहा गया है कि यह अत्यन्त वेगवान तथा चमकते हुये सुसज्जित सौ रथों पर चलती हैं । इस 'रथ' को लाल रंग वाले बलशाली तथा प्रशिक्षित घोडे (किरणें) खींचकर आकाश में लाते है; उस समय पक्षी-गण अपने कलरव से तथा मन्त्रगायक गण अपनी मधुर वाणी से उसका स्वागत् करते हैं । इस प्रकार आलोक से आवृत्त 'उषा' जब् प्राची-क्षितिज पर प्रादुर्भूत होती है तो रजनी के घोर अन्धकार को वस्त्र के समान दूर फेंक देती है ।'उषा'के लिये मघोनी (दानशीला), विश्वावारा (सबके द्वारा वरण की जाने वाली), प्रचेता (प्रकृष्ट ज्ञान वाली), सुभगा (सौभाग्यशालिनी), सूनरी (सुन्दरी), रेवती (धनवाली), अश्ववती, गोमती, ऋतावरी आदि नामों से जानी जाती है। इस प्रकार उषा की प्रार्थना प्रकाश, धन, पुत्र तथा दीर्घायु के लिये की गयी है । वह दानियों को दान करने के लिये प्रेरित करती है । संपूर्ण जगत 'उषा' को प्रणाम करता है क्योंकि वह सबको प्रकाश देने वाली परम शक्ति मानी जाती हैं ।
यही इश्वरीय परम शक्ति अनेक रूपों में इस लोक में स्तुतिपरक मानी जाती है इसके जितने भी स्रोत हैं, हमारी ऊर्जा भी उन्ही के इर्द गिर्द स्पंदित होती है । सृष्टि के अभ्युदय से लेकर जगत के अस्तित्वमान होने तक शक्ति के रूप में सदा-सर्वदा प्रत्येक प्राणी के साथ चलते है यहां तक की सूक्ष्म और न दिखाइ देने वाले जीव-जन्तुओं तक के जीवन स्पन्दन में यही अदृश्य शक्ति विद्यमान होती है । नवरात्र के पर्व पर हम देवी के नौ स्वरूपों की आराधना करते हैं । जिसमें सर्वप्रथम शैलपुत्री का स्वरूप आता है ।

शिव कल्याण का रूप है और और शैलपुत्री कल्याण करने वाली हैं । इस शक्ति का प्रकृति के कण-कण में वास है इसलिये प्रकृति का संरक्षण कर उसका मान रखने पर शक्ति का संतुलन बना रहता है सनातन धर्मग्रन्थों में प्रकृति के समन्वय और संतुलन की सुन्दर प्रेरणायें उल्लिखित हैं । शक्ति का दूसरा रूप मां ब्रह्मचारिणी का है तीसरा मां चन्द्रघटा, चौथा कुष्माण्डा, पांचवां स्कन्दमाता, छटा कात्यायनी, सातवां कालरात्रि, आठवां महागौरी, नौवां स्वरूप मां सिद्धिदात्री का है श्रीदुर्गासप्तशती-ऋग्वेदोक्त देवीसूक्त में मन्त्र सं -८ मे कहा है –

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभाणा भुवनानि विश्वा ।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव।।[6]

सिद्धिदात्री देवी कहती है –हे जीव मेरे बिना पत्ता भी नहीं हिलता, मैं ही चारों ओर हूं । मुझसे ही जगत है,इस ब्रह्माण्ड का अस्तित्व मुझसे ही है मुझसे ही समस्त सृष्टि और समष्टि है । वास्तविकता में यही नवरात्र शक्ति है जिसकी आराधना मानवमात्र के लिये प्रशस्त हैं ।अपने अन्दर की ऊर्जा को पहचान कर बाहरी ऊर्जा से समन्वय आवश्यक है । इस मन्थन द्वारा हमें दैवीय शक्ति की सर्वोच्च प्रतिष्ठा के दर्शन होते हैं । नारी के विविध गरिमामय स्वरूपों के दर्शन प्रतीत होते हैं । देवी दुर्गा सजग है, सक्षम है, सत्य की पक्षधर है, प्रगतिशील हैं, अभूतपूर्व है, परम सात्विक और आनन्दमयी हैं ।आवश्यकता होने पर अत्यन्त क्रूर और अतिशय दयालु भी हैं । देवी के समस्त रूप व्यक्तित्व के विरोधाभासों को संतुलन के साथ जीने की प्रेरणा देते हैं । मां दुर्गा की सभी विशेषतायें सात्विक व पतिव्रता स्त्रियों में भी पायी जाति है । दुर्गा का प्रादुर्भाव अत्याचारियों से संघर्ष और उनके शमन के लिये हुआ था । दुर्गा 'त्रि शक्ति'का समन्वय है उनकी उत्पत्ति ब्रह्मा, विष्णु और महेश की सम्मिलित शक्तियों से हुयी है और कहा भी है-

सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा ।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षन्महिषमर्दिनी ।।[7]

'मातृका रहस्य' के अनुसार वह तीन गुणों से समन्वित तथा मूर्तिमान परम कुण्डली स्वरूपा हैं ।उन्हीं के संयोग से ब्रह्मा, विष्णु व महेश की सत्ता है ।मां दुर्गा अजेय है उनके सच्चे साधकों कि कभी पराजय नहीं हो सकती इस तथ्य कि पुष्टि लिये कामधेनुतन्त्र में कहा भी है कि -

हरिब्रह्मात्मकं वर्णं गुणत्रयसमन्वितम् ।
इकारं परमेशानि स्वयं कुण्डली मूर्त्तिमान् ।
विष्णुमयं वर्णं तथा रुद्रमयं सदा ।।[8]

अतः कहा जाता है कि शक्ति शब्द में 'श' अक्षर एश्वर्य का और 'क्ति' पराक्रम का प्रतीक माना जाता है, इन दोनों को प्रदान करणे वाली महिमा को ही शक्ति कहा जाता है जैसा कि ब्रह्मवैवर्तपुराण में कहा गया है –

ऐश्वर्यवचनः शश्च, क्तिः पराक्रम एव च ।
तत्स्वरूपा तयोर्दात्री, सा शक्तिःपरिकीर्तिता ।।[9]

यही वजह है की साधना साधक को चरमोत्कर्ष की ओर ले जाती है जिससे कि उसके जीवन में सुखद बदलाव परिलक्षित होते हैं ।वस्तुतः यदि देखा जाये तो कोइ भी साधना शक्ति की ही साधना होती है । प्रायः नित्य-नैमित्तिक या कोइ भी संप्रदाय के अन्तर्गत हो ;अथवा शाङ्करोक्त पञ्चदेवोपासना – गाणपत्य, सौर, शाक्त या वैष्णव सभी मतों के अनुसार शक्ति की ही आराधना की जाती है ।सनातन धर्म के अनुसार परमसत्ता तो विशुद्ध रूप से अद्वैत और निर्गुण,निर्विकार है अर्थात् संपूर्ण चराचर ब्रह्माण्ड में परमशक्ति ही व्याप्त है ।

पादटिप्पणी

1. ब्रह्मवैवर्तपुराण,कृष्णखण्ड १२६ /९६ -९८,१००
2. नारदपञ्चरात्र २/३/५१,५४
3. नन्दिकेश्वरकाशिका - ०७
4. लिङ्गार्चनतंत्र उद्धृत https://sa.wikisource.org/s/aze
5. ऋग्वेद १/४८/६
6. श्रीदुर्गासप्तशती-वेदोक्त देवीसूक्त मन्त्र सं -८
7. श्रीदुर्गासप्तशती देवीकवच वैकृतिक रहस्य मन्त्र सं.७
8. कामधेनुतन्त्र उद्धृत https://sa.wiktionary.org/wiki/इ
9. ब्रह्मवैवर्तपुराण प्रकृति खण्ड २/१०

संदर्भग्रन्थसूची

1. ब्रह्मवैवर्तपुराणम्, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, २००९
2. नारदपञ्चरात्र भारद्वाज संहिता, खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई, २०११
3. नन्दिकेश्वरकाशिका https://hi.wikipedia.org/wiki/नन्दिकेश्वरकाशिका
4. श्रीदुर्गासप्तशती, गीताप्रेस गोरखपुर, २०१४
5. कामधेनुतन्त्र उद्धृत https://sa.wiktionary.org/wiki/इ
6. ऋग्वेद, नाग प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९१